IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, July 2023

गरीबी और बेरोजगारी से मुक्ति में समाचार पत्रों की भूमिका (दैनिक भास्कर, नईदुनिया एवम पत्रिका के विशेष संदर्भ में)

डॉ. हृदय नारायण तिवारी
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी अध्ययनशाला
एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (म.प्र.)
मोबाइल : 9203104739
hntiwariojaswini@gmail.com

एक समय में 'सोने की चिड़िया' कहलाने वाला भारत देश आज कई समस्याओं से जूझ रहा है। उनमें से एक प्रमुख समस्या गरीबी और बेरोजगारी है। यह समस्या देश में ही नहीं अपितु दूसरे देशों में भी व्याप्त है। किसी भी देश में इस समस्या का प्रमुख कारण जनसंख्या है। जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में भारत दूसरे स्थान पर आता है। यही कारण है कि आज बेरोजगारी की समस्या उत्कर्ष पर है। स्वतंत्रता के इतने वर्ष बाद भी सरकारें नए रोजगार बनाने और गरीबी को रोकने में विफल रही हैं। यही कारण है कि ग्रामीण अंचल से लोगों का शहरों की ओर बड़े पैमाने पर पलायन हो रहा है। 19 दिसम्बर 2016 पत्रिका में प्रकाशित आँकड़ों के आधार पर वर्तमान में 29.8 प्रतिशत भारतीय आबादी गरीबी रेखा से नीचे रहती है। इन आँकड़ों के आधार पर गरीब की श्रेणी में वह लोग आते हैं, जिनकी दैनिक आय शहरों में 28.65 रुपये और गाँव में 22.24 रुपये से कम है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि जिस देश में दाल की कीमत सौ रुपए के ऊपर हो, उस देश में यह राशि कहाँ ठहरती है। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों की संख्या बहुत ज्यादा है। सरकारी आँकड़े के अनुसार 30 रुपया प्रतिदिन कमाने वाला व्यक्ति गरीब नहीं है। यह आँकड़ा निश्चित तौर पर अपने–आप में हास्यास्पद है। 8 दिसम्बर 2016 नईदुनिया में प्रकाशित खबर के आधार पर मध्यप्रदेश में लगभग 60 प्रतिशत लोग गरीबी एवं बेरोजगारी में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। 20 जनवरी 2014 दैनिक भास्कर में प्रकाशित खबर के आधार पर वर्तमान में पूरे विश्व में भारत में गरीबों की संख्या सबसे अधिक है। तीस साल पहले भारत में विश्व के गरीबों का पाँचवा हिस्सा रहता था और अब यहाँ दुनिया के एक–तिहाई गरीब रहते हैं। इसका मतलब तीस साल पहले के मुकाबले भारत में आज ज्यादा गरीब रहते हैं। भारत में गरीबी का मुख्य कारण जनसंख्या के साथ–साथ बुनियादी वस्तुओं की लगातार बढ़ती कीमतें भी हैं। गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले व्यक्ति के लिए जीवित रहना ही एक चुनौती है। इस चुनौती को दैनिक भास्कर, पत्रिका और नईदुनिया तीनों समाचार पत्र प्रमुखता से प्रकाशित करते हैं। भारत में गरीबी का एक अन्य कारण जाति व्यवस्था और आय के संसाधनों का असमान वितरण भी है। प्रदेश में संगठित और असंगठित दोनों ही क्षेत्रों में बेरोजगारी तेज गति से बढ़ रही है। इस बेरोजगारी के बढ़ने का बड़ा कारण सार्वजनिक क्षेत्र का दायरा सीमित होता जाना और असंगठित क्षेत्र में निजीकरण–आर्थिक उदारीकरण का प्रभाव है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. दुबे, डॉ. एस.के., 'पत्रकारिता के नये आयाम', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2006
2. यामिनी, रचना भोला, 'पत्र और पत्रकारिता', डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2006
3. पन्त, एन.सी., 'हिन्दी पत्रकारिता का विकास', राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
4. गोदरे, विनोद, 'हिन्दी पत्रकारिता स्वरूप एवं संदर्भ', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
5. कौल, जवाहरलाल, 'हिन्दी पत्रकारिता का बाजार भाव', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
6. चैतन्य, एस.पी., 'पत्रकारिता एवं जनसंचार प्रश्नोत्तरी', प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2008

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, July 2023

7. रानी, डॉ. राजकुमारी, 'पत्रकारिता की विविध विधाएँ', जयभारत प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005

समाचार–पत्र

1. दैनिक भास्कर
2. नईदुनिया
3. पत्रिका

पत्रिकाएँ

1. आलोचना
2. अहा! जिंदगी
3. अक्षर वार्ता

वेबसाइट

http://www.dainikbhaskar.com

http://www.patrika.com

http://www.naiduniya.com

http://www.amarujala.com